बगान में गुल-गपाड़ा

लेखन व चित्रः स्वैन नॉर्डक्विस्ट
भषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

फड़-फड़, खिचर-पिचर, टूंग-टांग!

जैसे ही फैस्टस और उसका बौडम बिल्ला मरक्युरी, बसन्त आने पर अपने सब्ज़ी बागान में बुवाई शुरू करते हैं, मुर्गियों का झुण्ड उनके बोए बीज और ताज़े केंचुए तलाशने आ धमकता है। दोनों बागवान अपने बागान को संभालने दौड़ते हैं, पर पाते यह हैं कि यह तो उनकी परेशानियों की शुरुआत भर है।

चुस्त पर उम्रदराज़ फैस्टस और उसका चतुर बिलौटा मरक्युरी अपने बागान की हिफ़ाज़त के लिए क्या कुछ नहीं करते। स्वैन नॉर्डक्विस्ट की यह पगलाई कहानी और उनके बारीकियाँ दर्शाते विनोद भरे चित्र बसन्त में बुवाई की ऊर्जा और खुशनुमा रंगों को प्रस्तुत करते हैं, जिसमें फड़फड़ाती मुर्गियाँ, रहस्यमय लोमड़ियाँ, भगोड़ा सूअर और जिज्ञासु गायें शामिल हैं।

बगान में गुल-गपाड़ा

लेखन व चित्रः स्वैन नॉर्डक्विस्ट
भषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बसन्त पक्की तौर पर आ चुका था। लम्बी और कड़ी सर्दियों के बाद, सब कुछ खुशनुमा था, फूट-फूल और गा-गुनगुना रहा था।

"समय आ गया है," फैस्टस ने अपने बिलौटे मरक्युरी से कहा। "आज बुवाई का दिन है!"

"बुवाई के दिन से क्या मतलब?" मरक्युरी ने नाखुशी से कहा। "आज तो खेलने का दिन है। देखो तो गुबरैले तक बाहर निकल चुके हैं।"

"नहीं," फैस्टस ज़ोर देकर बोला। "बुवाई का समय हो चुका है। अगर हम आज बीज बो देंगे तो हमें पतझड़ तक ये बड़े-बड़े गाजर मिलेंगे। और हर बोए गए आलू के बदले पाँच या दस आलू भी।"

"मैं पाँच या दस आलुओं का क्या करुंगा," मरक्युरी ने बहस की। "और गाजर तो मुझे कतई नापसन्द हैं। इसके बदले तो मैं माँस का कोफ्ता बोना चाहूँगा।"

"चाहो तो बो सकते हो," फैस्टस बोला। "पर वे उगेंगे नहीं।"

"तुम्हें कैसे पता कि वे उगेंगे नहीं, जब तुमने उन्हें उगाने की कभी कोशिश ही नहीं की है," मरक्युरी ने सवाल किया।

जवाब में फैस्टस ने अपने कंधे उचकाए।

जब बूढ़ा फैस्टस पंजा और फावड़ा ढूंढने गया, मरक्युरी माँस का कोफ्ता लाने दौड़ा।

फैस्टस ने अच्छे से खुदाई की, तब पंजे से करीनेवार कतारें बनाईं। इसके बाद अलग-अलग क्यारियों में बीज बोए - गाजर, प्याज़, मटर और सेम के। मरक्युरी ने अपना कोफ्ता बोया, और थोड़ी-थोड़ी देर पर उसे उगते देखने जाता रहा।
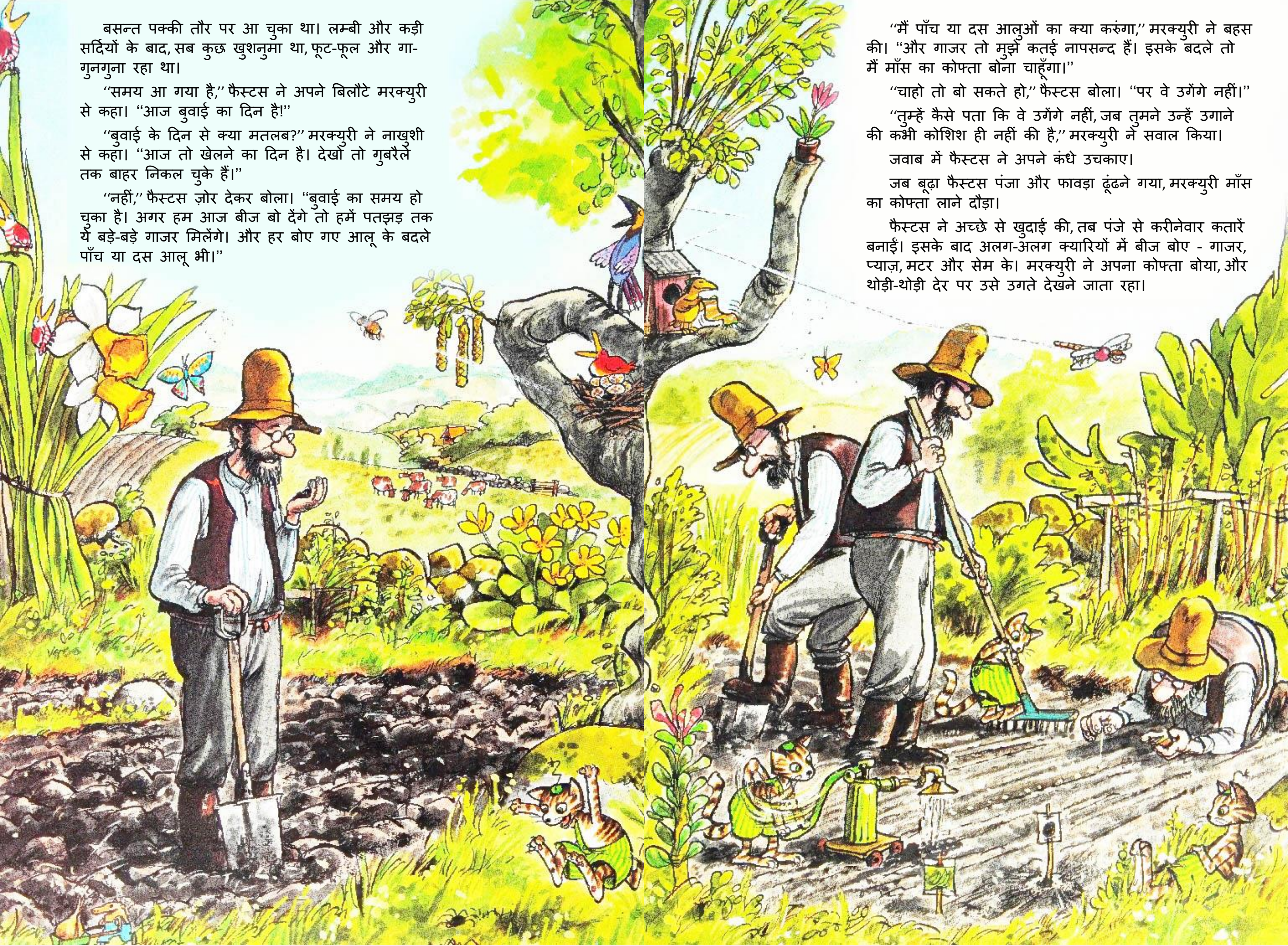
जब बस आखिरी कतार ही बोने को बची थी फैस्टस ने अचानक कुड़कुड़ाने की आवाज़ सुनीः
"समय हो गया है! वह वहाँ खोद रहा है!" और अगले ही पल मुर्गियों का एक बड़ा-सा झुण्ड तेज़ी से बागान में बढ़ आया ताकि केंचुओं, गुबरैलों और दूसरे ताज़े कीड़ों को खोद कर टूंग सके।

फैस्टस अपने बीजों को बचाने इधर दौड़ा, तब उधर। "निकलो बाहर!" वह चीखा। पर मुर्गियों को बसन्त के ढेरों ताजे और ज़ायकेदार कीड़े मिल रहे थे, वे यों आसानी से कब जाने वाली थीं।

मरक्युरी अपने माँस कोफ्ते को बचाने बहादुरी से लड़ा, पर एक तेज़-तर्रार मुर्गी ने उसका खज़ाना लूटा और फौरन गटक लिया।

"क्या तुम सबको बागान से बाहर रखने के लिए दड़बे में बन्द कर देना होगा?" फैस्टस गुस्से से चीखा। पर मुर्गियों पा कोई असर न हुआ। उन्होंने खुशी-खुशी मिट्टी खोदना और टूंगना जारी रखा।

फैस्टस ने अपना पैंतरा बदला। "क्या तुम सब सूरजमुखी के बीज खाना पसन्द करोगी?" उसने आवाज़ में मिश्री घोल कर पूछा।

पिंची ने, जो मुर्गियों की सरदारनी थी, अपना सिर उठाया। "हमारे पास खाने की कमी नहीं, काफ़ी खाना है, शुक्रिया।' 'इतना कह वह वापस खोदने-टूंगने में जुट गई।

फैस्टस ने नया तरीका आज़माया। "क्या तुम लोगों को ज़मीन का अपना ही एक टुकड़ा नहीं चाहिए जहाँ तुम सब बिना किसके सताए अपनी खोदा-खादी जारी रख सको?"
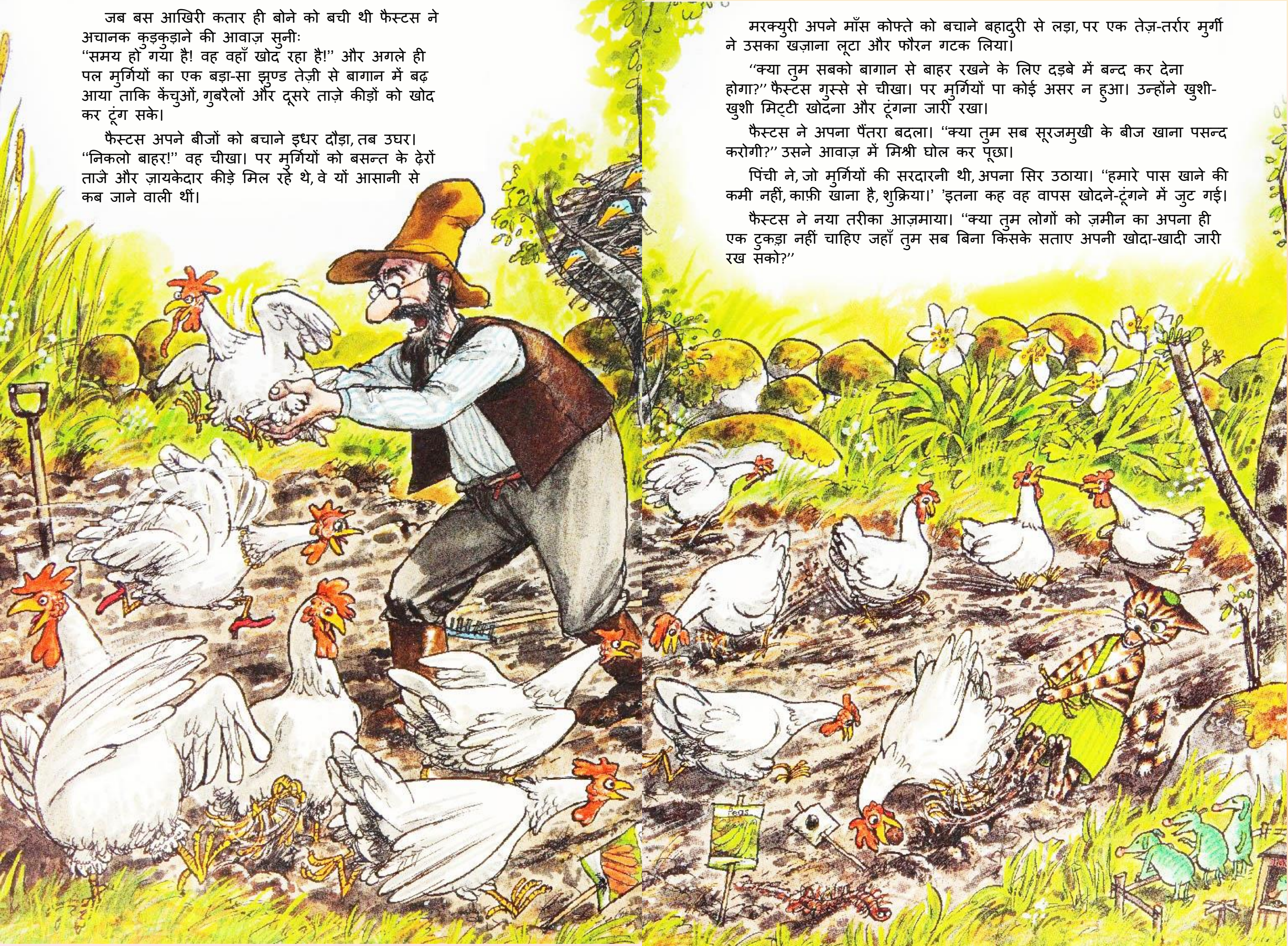
यह विचार कहीं ज़्यादा आकर्षक था। मुर्गियाँ फैस्टस के पीछे एक लम्बी कतार बना चल पड़ीं। मरक्युरी पीछे से उन्हें हाँकता रहा।

फैस्टस घर के पिछवाड़े में बने मुर्गियों के दड़बे में गया और उसने वहाँ पंजे से ज़मीन के एक टुकड़े को खोदा। पर पिंची ने पीठ मोड़ ली। "यहाँ के सारे केंचुए और कीड़े हम पहले ही खा चुके हैं। और फिर अगर हम अन्दर गए तो तुम हमें दड़बे में बन्द ना कर दोगे।"

फैस्टस कुछ कह न सका, क्योंकि ठीक यही तो वह करने वाला था।

ठीक उसी पल मरक्युरी उछला और पूरा दम लगा कर चीखाः "लोमड़ी आ रही है!"

घबरा कर डैन फड़फड़ाती मुर्गियाँ आनन-फ़ानन में दड़बे में घुस गईं, तब जाकर उन्हें अपनी ग़लती का अहसास हुआ।

"हा! हा! हा! तुम मुर्गियाँ भी..." मरक्युरी ने ताना कसा। "यही होता है जब तुम मेरे माँस के कोफ्ते को डकार जाती हो।"

मुर्गियाँ इतनी उदास दिखीं कि फैस्टस को उन पर दया आ गई। "मैं बस दो-एक दिन में तुम लोगों को फिर से आज़ाद कर दूंगा," उसने वादा किया। "और अगर मुझे कीड़े दिखे तो उन्हें तुम लोगों के लिए बचा कर रखूंगा।"
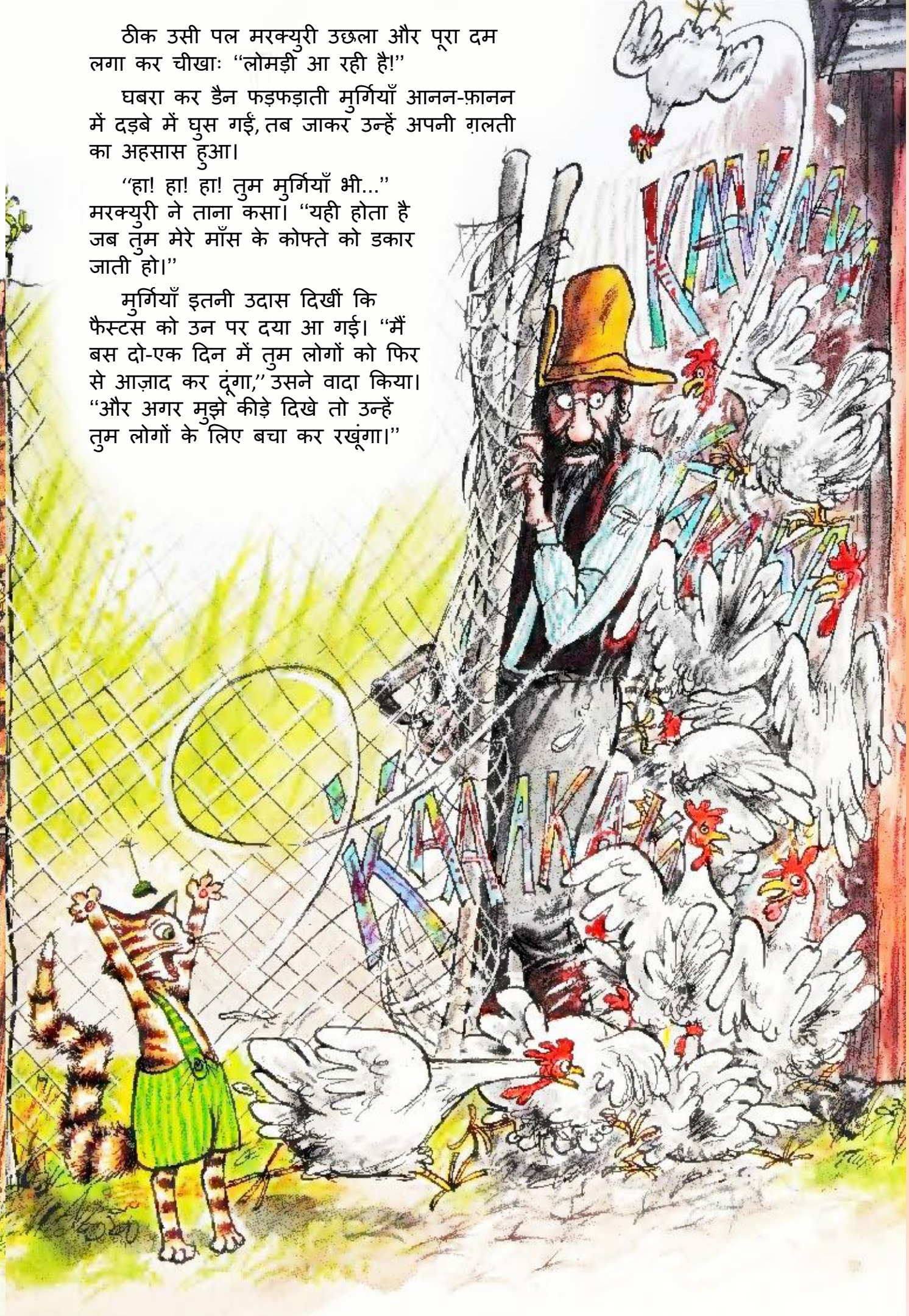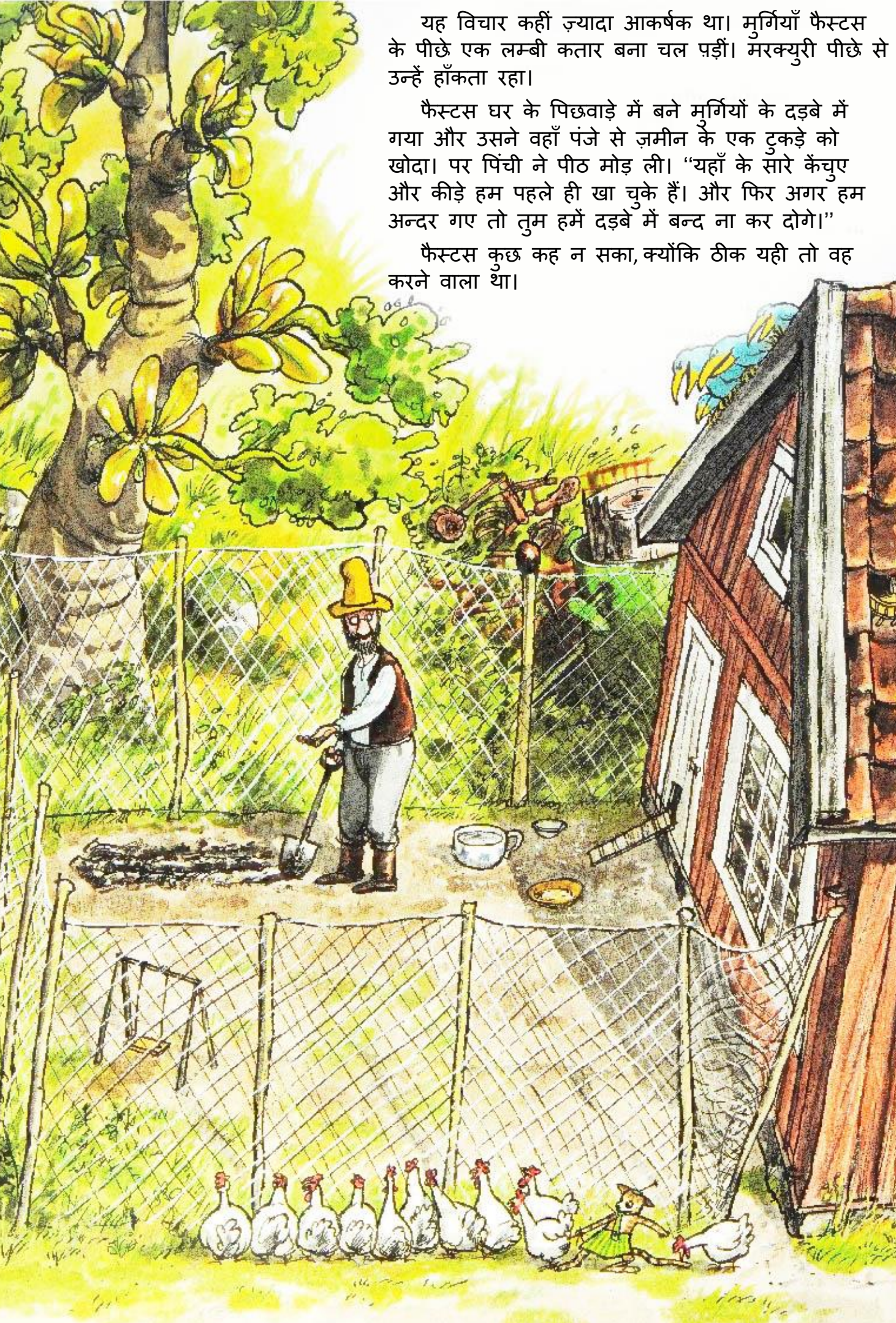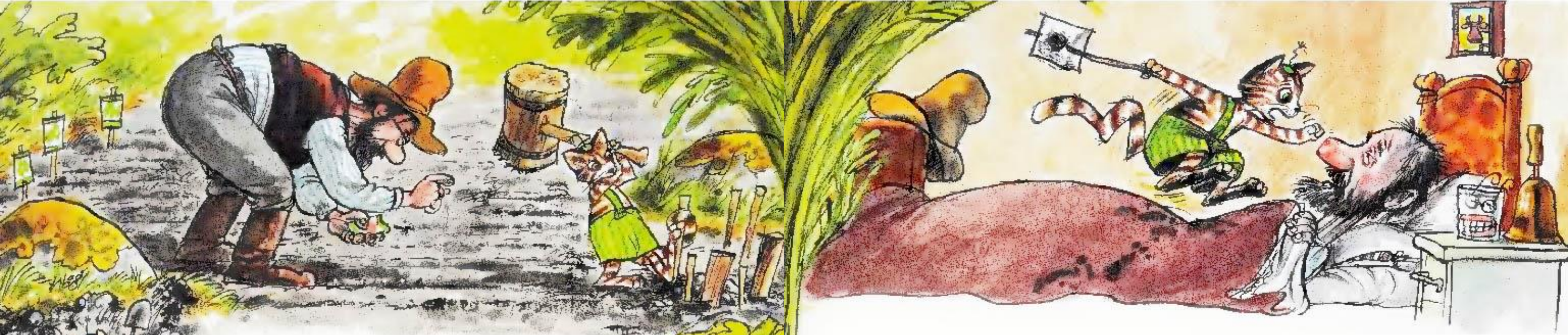
फैस्टस और मरक्युरी अपने सब्ज़ी बागान मे लौटे। वहाँ क्या गदर मचा हुआ था।

"जो कुछ हमने किया वह सब तहस-नहस हो चुका है," फैस्टस ने अफ़सोस के साथ कहा।

"मेरा माँस कोफ्ता भी तहस-नहस हो चुका है। वह खाया जा चुका है, गायब हो चुका है।!" बिलौटे ने शिकायत की। मरक्युरी एक और कोफ्ता लाया और उसे जितने गहरे हो सका उतना गहरे बो दिया। तब कोफ्ते की हिफ़ाज़त के लिए उसने उसके गिर्द एक बाड़ भी बनाई।

जब वह फ़ारिग हुआ फैस्टस के कुछ आलू बोने बाकी थे। सो मरक्युरी ने काम पूरा करने में उसकी मदद की।

"लो भाई," फैस्टस कराहते हुए बोला। "आख़िरकार काम पूरा हो गया। अब बस पानी पिलाना और इन्तज़ार करना है।"

"अगर तुम पानी पिला दो, तो इन्तज़ार मैं कर लूंगा," इतना कह बिल्ला वहाँ बैठ गया, ताकि बूढ़ा कहीं यह न सोचे कि वह काम में कोताही कर रहा है।
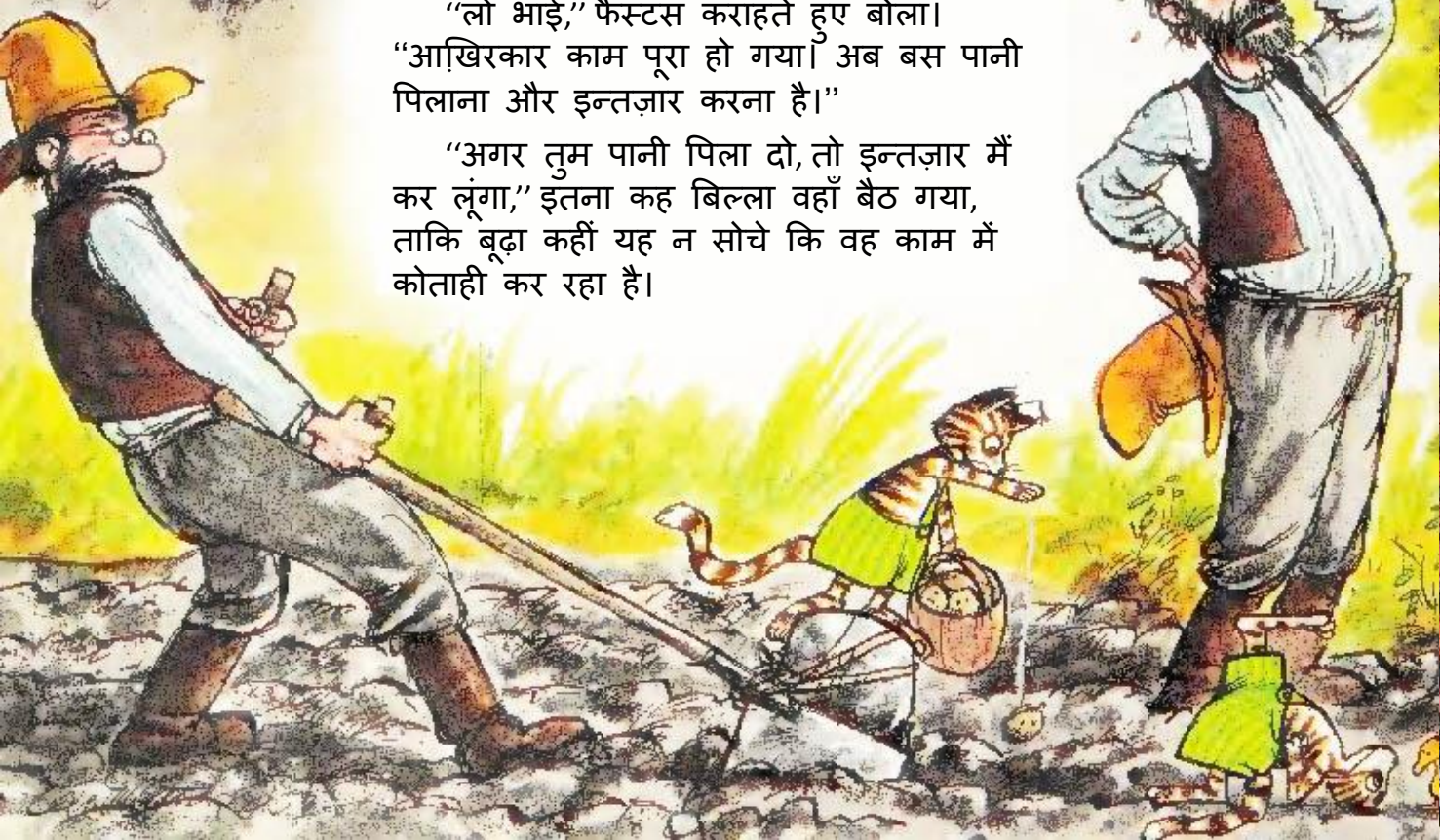
अगले दिन अल्ल सुबह मरक्युरी यह देखने दौड़ा कि उसका कोफ्ता कितना उगा है। पर उगना तो क्या, कोफ्ता तो नदारद था।

किसीने करीने से बनी क्यारियों को पैरों तले रौंद दिया था। सब कुछ उलटा का पुलटा और अन्दर का बाहर था। हर जगह गड्ढे नज़र आ रहे थे।

मरक्युरी दौड़ा और फैस्टस की छाती पर चढ़ कूदने लगा। "फैस्टस, फैस्टस जागो! मेरा माँस का कोफ्ता ग़ायब है और तुम्हारे गड्ढे अन-आलू हो चुके हैं।"

"गड्ढे अन-आलू हैं?" फैस्टस बुदबुदाया। "क्या बकवास कर रहे हो बिल्ले?"

मरक्युरी ने बूढ़े को बागान की ओर घसीटा। उनींदे फैस्टस ने आँखे मसलते हुए गड्ढों को देखा। "यह किसने किया?" वह पूरी तरह से जग कर चीखा। तीन डरी हुई मुर्गियों ने पेड़ के पीछे से झाँका। "अरे! मुर्गियाँ दड़बे से निकल आई हैं," फैस्टस ने चकरा कर कहा। "पर वे निकलीं कैसे?"

फैस्टस सीधे दड़बे की ओर दौड़ा और उसका दरवाज़ा खोला। "क्या हम अब बाहर निकल सकते हैं?" मुर्गियों में से एक ने चिंचिया कर पूछा।

"निकल सकते हैं! बाहर तो निकल ही चुके हो तुम लोग और मेरे आलुओं की क्यारी बरबाद भी कर चुके हो," फैस्टस गरजा।

पिंची ने अपनी आँखें अख़बार से ऊपर उठाईं। "क्या कह रहे हो बूढ़े बाबा? हम तो पूरी रात यहीं थे," उसने चिढ़ कर कहा।

दूसरी मुर्गियों ने भी सुर में सुर मिलाया। "हम सब तो सो रहे थे।" "क्या तुम्हें चाय चाहिए?"

"तुम चाहती हो कि मैं इस बात पर विश्वास करूं?" फैस्टस ने आँखें तरेर कर पूछा। ठीक उसी वक़्त मरक्युरी उसके कंधे पर उछल कर चढ़ा, और उसके कपाल पर एक आधा आलू ठोका। "देखो फैस्टस रात में कोई आलू खाता रहा है। मुर्गियाँ आलू नहीं खातीं।"

"बिलकुल नहीं," सभी मुर्गियों ने कुड़कुड़ा कर कहा, "हम आलू नहीं खाते।"
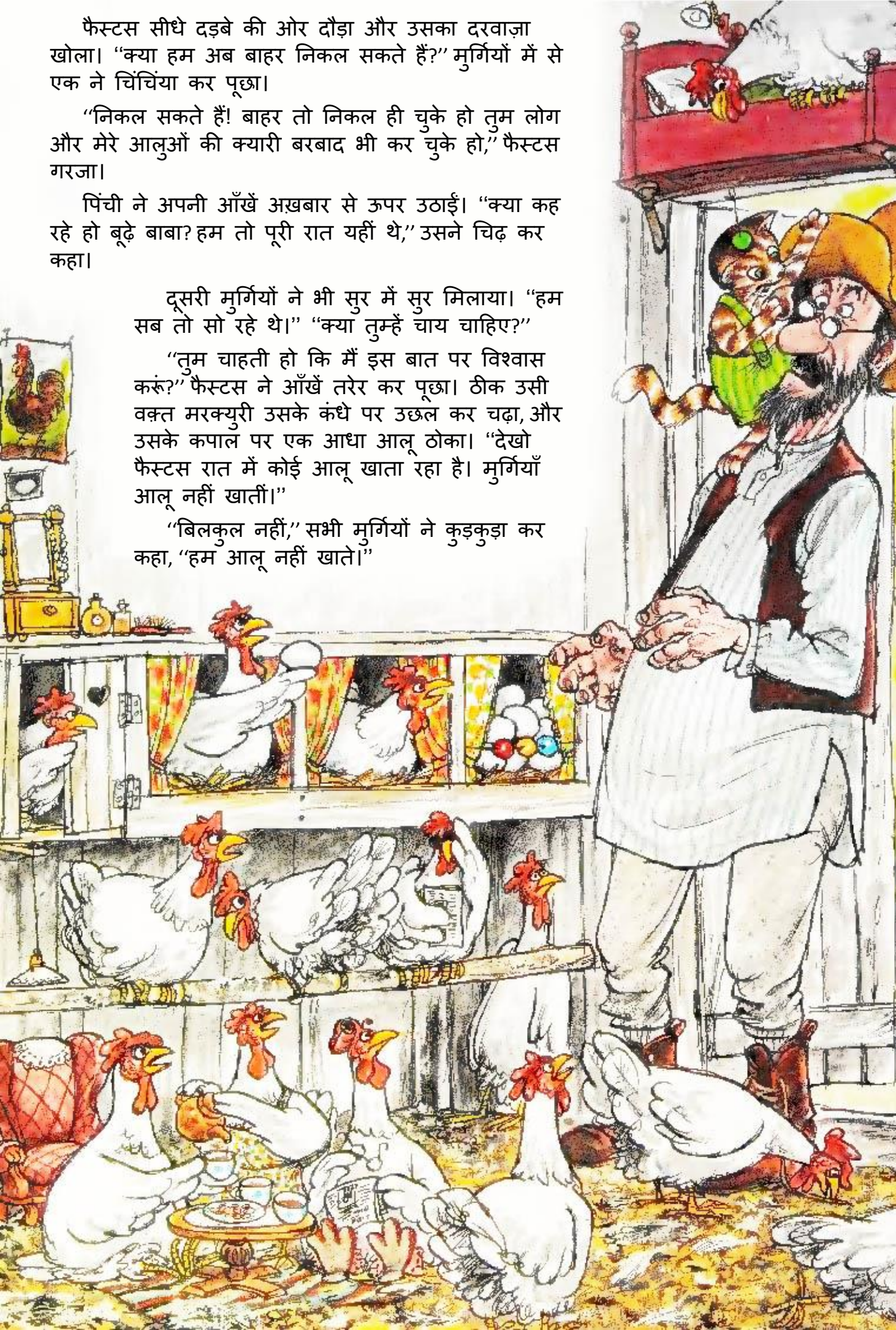
"जा कर देखो फैस्टस," मरक्युरी ने हुकुम झाड़ा। "ज़मीन पर बड़े-बड़े अन-मुर्गी पैरों के निशान हैं।"

"अन-मुर्गी पैरों के निशान?" फैस्टस ने अविश्वास के साथ कहा। "तुम फिर से बकवास कर रहे हो बिल्ले!"

"अन-मुर्गी निशान?" मुर्गियों ने भी कहा। "हम भी उन्हें देखना चाहेंगे।"

मरक्युरी बूढ़े को वापस खींच कर बागान ले गया। सारी मुर्गियाँ पीछे-पीछे चली आईं। "ये देखो तो सही फैस्टस," पिंची खुश हो गई थी। "हमने यह सब नहीं किया। ज़रूर कोई घोड़ा रहा होगा।"

"ना,ना, कोई बकरी होगी!" मरक्युरी ने कहा

"नहीं," फैस्टस ने अपने जबड़े को रगड़ते कहा। "मुझे मालूम है कि दरअसल कौन था। वह तो एक.."

पर चरागाह से आती एक ज़ोरदार चीख ने उसकी बात काट दी।
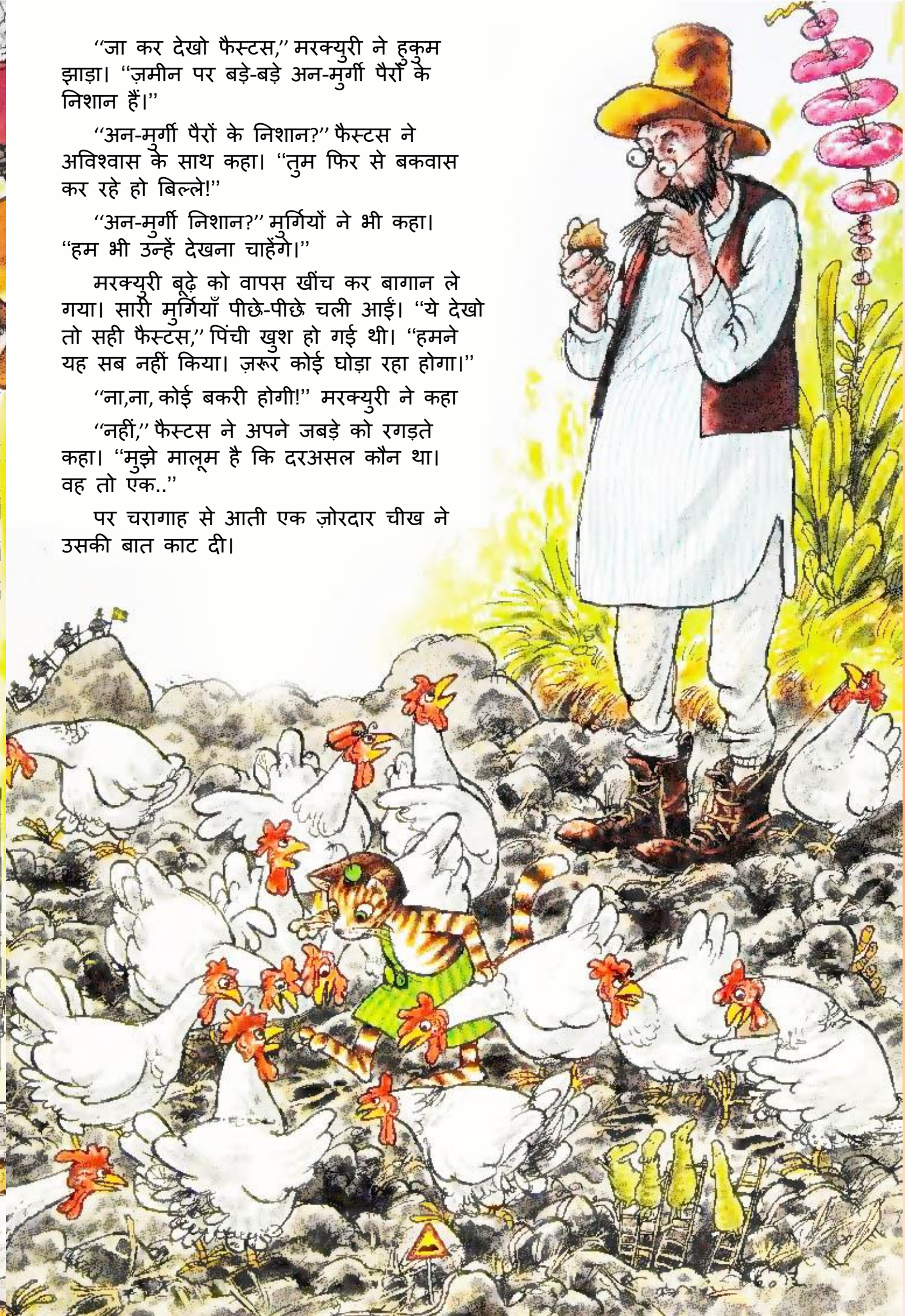
“...सूअर था,” फैस्टस ने अपनी बात खत्म की।

और सच में उसका पड़ौसी गुस्तावसन एक रस्सी से बंधे सूअर को खींचता-घसीटता नज़र आया।

“ग्रैचन कल रात निकल भागी थी,” गुस्तावसन ने कहा। “मुझे वह एंडरसन के खेत में मिली। उसे भरपेट आलू खाना पसन्द है।”

“लगता है वह पहले यहाँ मुँह मारने के बाद आगे गई होगी,” फैस्टस ने अपनी बरबाद क्यारियों की ओर इशारा कर कहा।

“यह तो बहुत ही बुरा हुआ,” गुस्तावसन बड़बड़ाया। “मैं तुम्हें कुछ नए आलू दे सकता हूँ।”

“रहने भी दो,” फैस्टस बोला। “मैं बेकार ही अपनी मुर्गियों को डपट रहा था। अब मुझे उन्हें अन-आलू क्यारियों में चुगने छोड़ देना चाहिए,” फैस्टस ने मुर्गियों को आँखें तरेर कर देखा। “ठीक है तुम लोग यहाँ टूंग सकती हो - अगर यह वादा करो कि तुम लोग मेरी सब्ज़ियों की क्यारियों में नहीं जाओगी।”

“हम वादा करते हैं, मुर्गियों ने कुड़कुड़ा कर कहा।
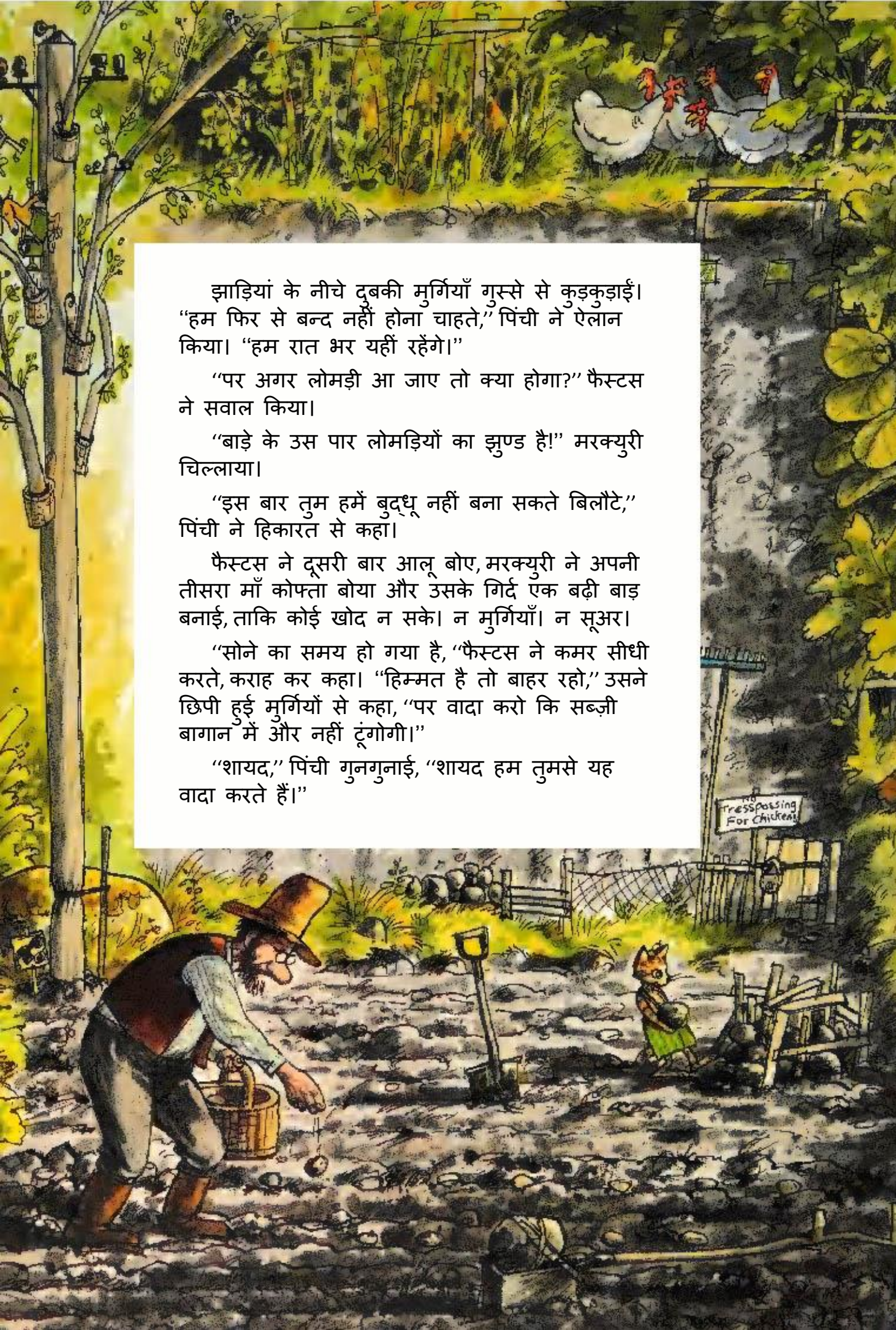
फैस्टस ने आलू की क्यारियों और बाकी सब्ज़ियों की क्यारियों के बीच एक बाड़ खड़ी की, ताकि मुर्गियाँ अपना वादा न भूलें। मरक्युरी वहाँ पहरेदारी करने खड़ा हो गया, ताकि जो मुर्गियाँ अपने वादे को ठीक से न समझी हों, उन्हें फ़ौरन भगा सके।

शाम होने पर फैस्टस ने मुर्गियों से कहा, “अब सोने का समय हो चला है। कीड़े खत्म हो चुके हैं। आलू बोने का समय हो गया है।” मरक्युरी शैतानी से मुस्कुराया। “और अब तुम सब कई सप्ताह तालाबन्द रहोगी,” उसने फुसफुसा कर कहा। “शश्श्श्श्शश्श!” बूढ़े ने धीमे से चेताया। पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। मुर्गियाँ यह सुन पगला गई थीं, वे कुड़कुड़ाती इधर-उधर भागीं। “वे लोग हमें फिर से दड़बे में बन्द करने वाले हैं! इन पर कभी भरोसा न करना। कभी नहीं।”

“मरक्युरी,” बूढ़े ने तल्ख़ी से कहा, “यह कहना क्या ज़रूरी था?”

“अरे! मैंने तो एक भी शब्द नहीं कहा, कहा क्या?” बिल्ले ने नाराज़ हो कहा।
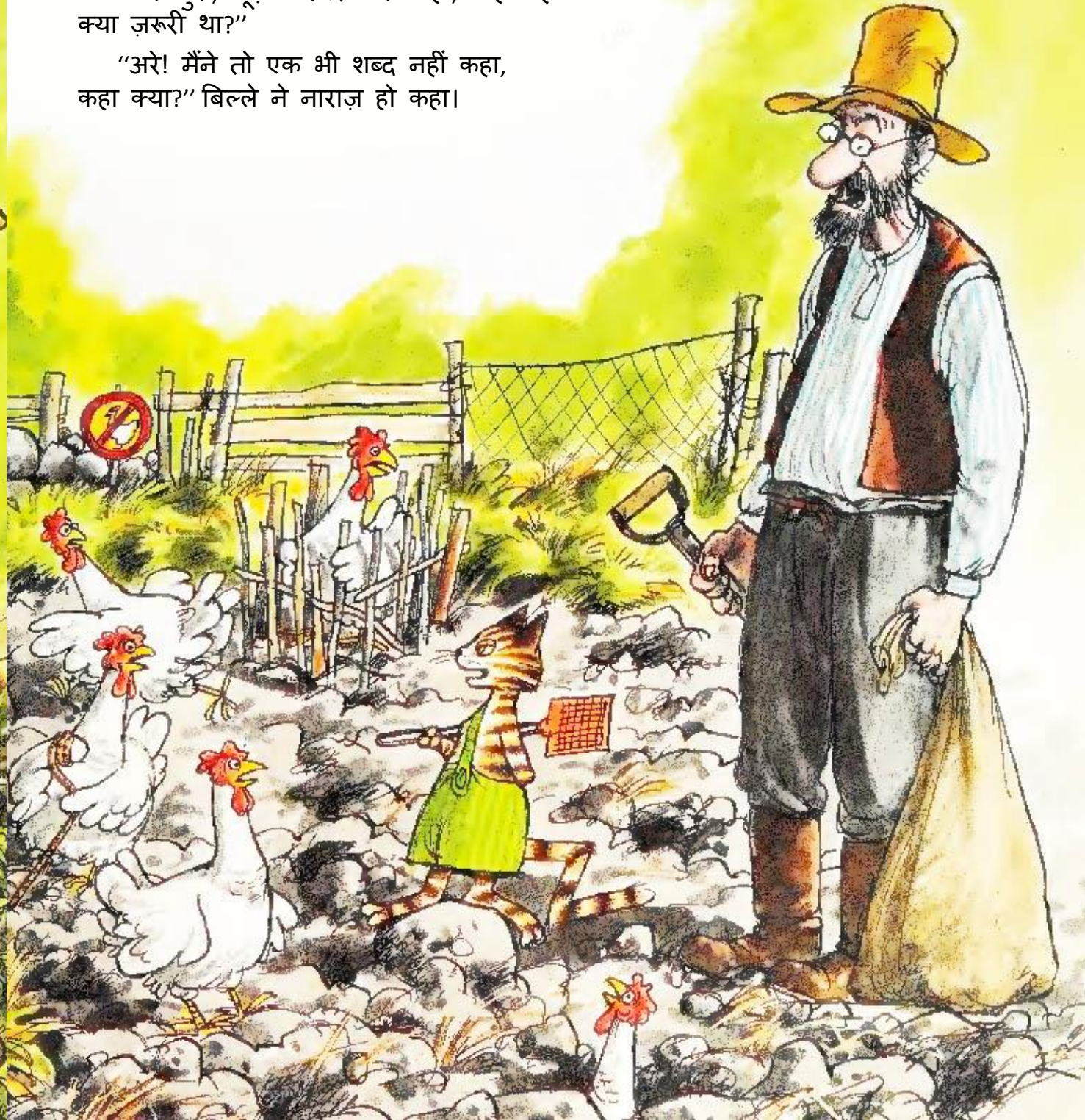
झाड़ियां के नीचे दुबकी मुर्गियाँ गुस्से से कुड़कुड़ाईं। "हम फिर से बन्द नहीं होना चाहते," पिंची ने ऐलान किया। "हम रात भर यहीं रहेंगे।"

"पर अगर लोमड़ी आ जाए तो क्या होगा?" फैस्टस ने सवाल किया।

"बाड़े के उस पार लोमड़ियों का झुण्ड है!" मरक्युरी चिल्लाया।

"इस बार तुम हमें बुद्धू नहीं बना सकते बिलौटे," पिंची ने हिकारत से कहा।

फैस्टस ने दूसरी बार आलू बोए, मरक्युरी ने अपनी तीसरा माँ कोफ्ता बोया और उसके गिर्द एक बढ़ी बाड़ बनाई, ताकि कोई खोद न सके। न मुर्गियाँ। न सूअर।

"सोने का समय हो गया है, "फैस्टस ने कमर सीधी करते, कराह कर कहा। "हिम्मत है तो बाहर रहो," उसने छिपी हुई मुर्गियों से कहा, "पर वादा करो कि सब्ज़ी बागान में और नहीं टूंगोगी।"

"शायद," पिंची गुनगुनाई, "शायद हम तुमसे यह वादा करते हैं।"

फैस्टस बिलौटे के पीछे-पीछे घर में घुसा और उसने दरवाज़ा बन्द किया। "सुनो मरक्युरी," उसने सोचते हुए कहा। "मुझे फ़िक्र है कि सचमें कोई लोमड़ी न आ जाए। पता है तुम सचमें एक बहादुर पहरेदार बन सकते हो।"

"क्या बक रहे हो तुम? क्या यह कह रहे हो कि एक बेचारा बिल्ला लोमड़ियों को भगा सकता है?" मरक्युरी ने दबी-सी आवाज़ में पूछा। "अकेले? घुप्प अंधेरे में?"

"नहीं, नहीं, मैं तो बस इतना चाहता हूँ कि तुम नज़र भर रखो कि कहीं वे आ तो नहीं रहीं हैं," फैस्टस ने समझाया। "तुम पेड़-घर में बैठ सकते हो। अपने साथ एक दूध की बाल्टी रख सकते हो, जिसमें कंकड़-पत्थर हों, और एक लालटेन भी। अगर लोमड़ी दिखे तो तुम बाल्टी को हिला और लालटेन जला कर उन्हें डरा और भगा सकते हो। तब तक शोर से मैं उठ आऊंगा। क्या तुममें यह सब करने की हिम्मत है?"

“बड़ी अच्छी बात है कि तुम इतने बहादुर हो,” फैस्टस ने मरक्युरी का हौसला बढ़ाते कहा।

“बिलकुल, मैं निडर हूँ,” मरक्युरी ने पलट कर कहा। “बिल्लियाँ होती ही निडर हैं। पर क्या तुम्हें पक्का पता है कि लोमड़ियाँ पेड़ पर नहीं चढ़ सकतीं?”

“बेशक, वे पेड़ पर नहीं चढ़ सकतीं,” फैस्टस ने भरोसा दिलाया।

फिर भी एहतियात के बतौर मरक्युरी ने फैस्टस से एक लम्बी रस्सी बंधवाई जो पेड़-घर से आँगन पार फैस्टस के सोने के कमरे की खिड़की से अन्दर तक जाती हो। फैस्टस को सोने से पहले रस्सी का एक सिरा अपने पैर के अंगूठे से बांधना था, ताकि अगर मरक्युरी उसे खींचे तो फैस्टस जाग जाए।
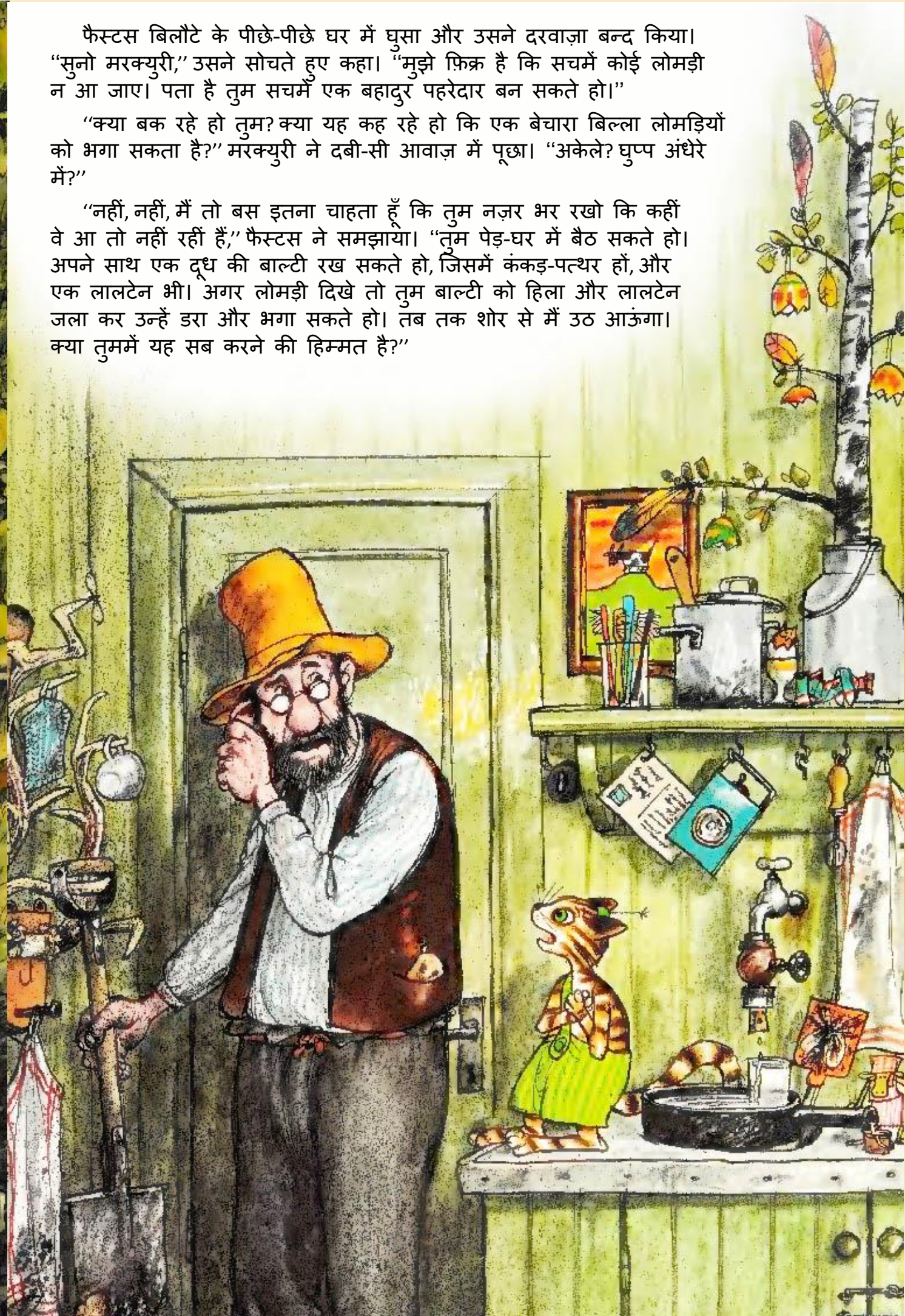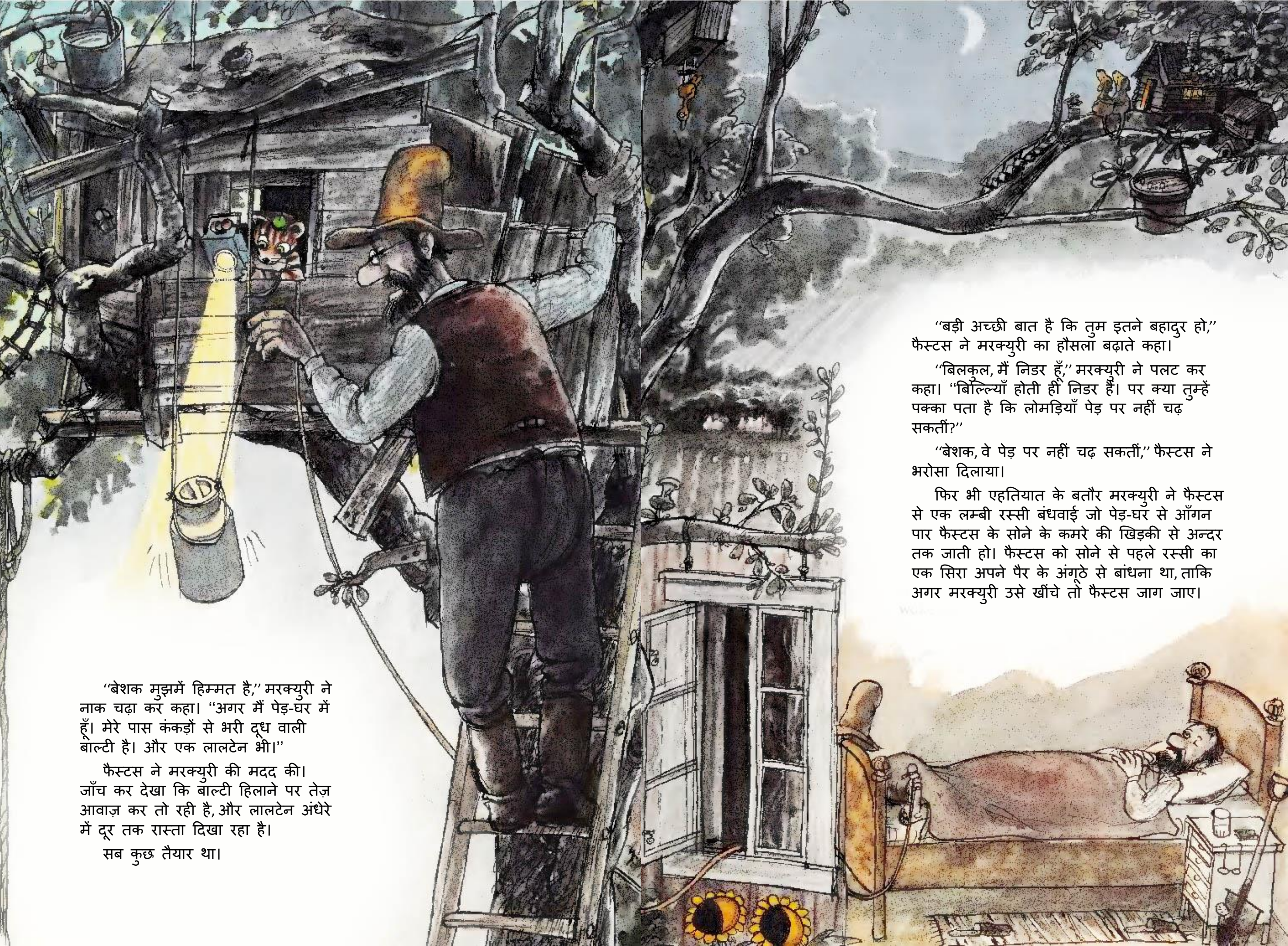
“बेशक मुझमें हिम्मत है,” मरक्युरी ने नाक चढ़ा कर कहा। “अगर मैं पेड़-घर में हूँ। मेरे पास कंकड़ों से भरी दूध वाली बाल्टी है। और एक लालटेन भी।”

फैस्टस ने मरक्युरी की मदद की। जाँच कर देखा कि बाल्टी हिलाने पर तेज़ आवाज़ कर तो रही है, और लालटेन अंधेरे में दूर तक रास्ता दिखा रहा है।

सब कुछ तैयार था।

मरक्युरी अकेला बैठा चौकसी करता रहा। उसे एक झाड़ी के नीचे दुबकी पाँच मुर्गियाँ नज़र आ रही थीं। वह सोचने लगा कि हो सकता है लोमड़ियाँ आए ही नहीं। पर अगर वे आती हैं तो भी मरक्युरी बाल्टी को हिलाने, लालटेन चमकाने और रस्सी खींच फैस्टस को जगाने को तैयार बैठा था।

मरक्युरी चौकसी करता रहा, पर अंधेरा जस का तस बना रहा। उसके विचार नींद की घुमेरी में भटकने लगे

शान्त रात
लोमड़ी नहीं आती नज़र
बहादुर मरक्युरी करता पहरेदारी
मुर्गियों की, इस रात.....
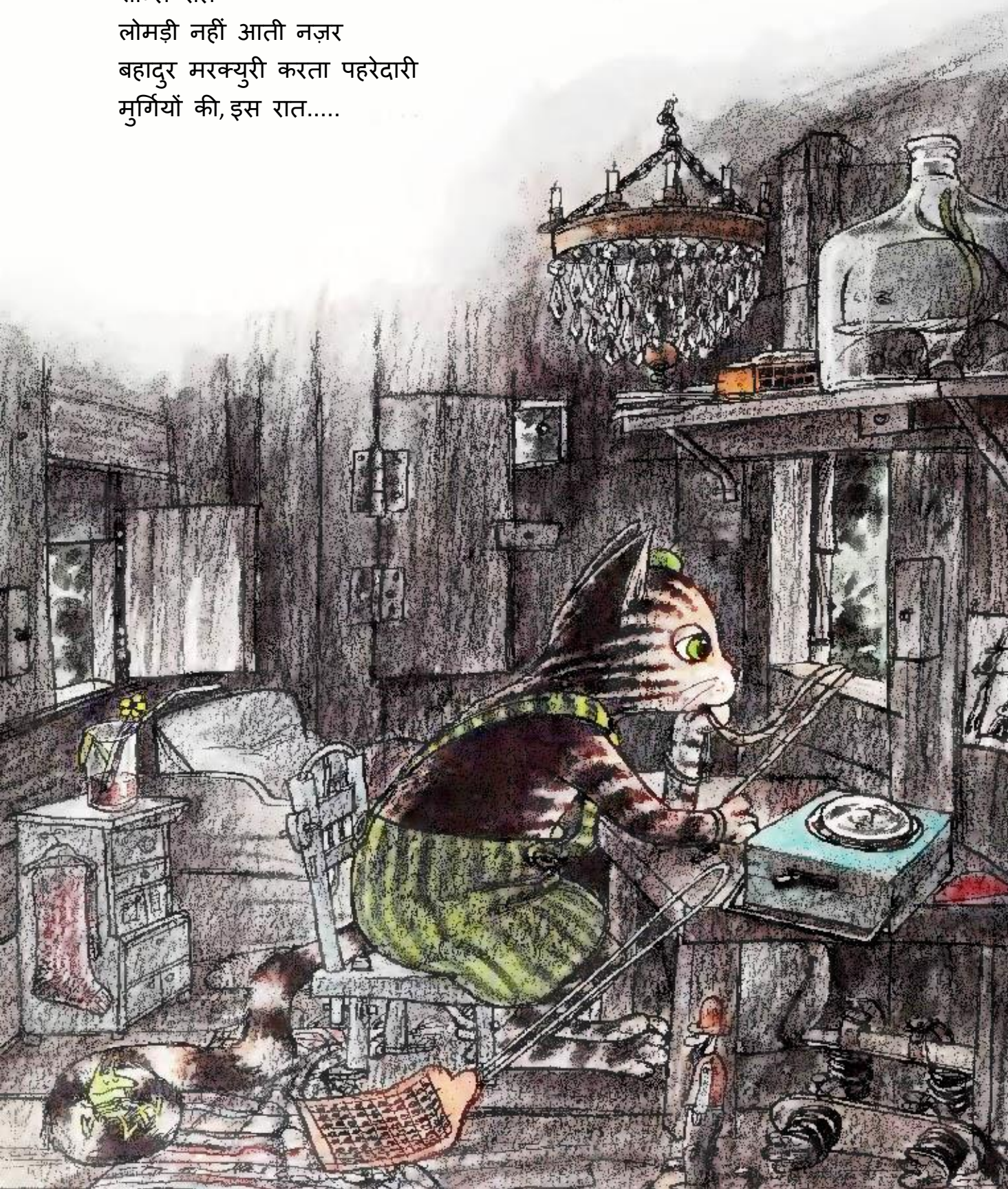
अचानक आँगन में कुड़कुड़ाहट से मरक्युरी चौंक कर जागा। अंधेरा अब लगभग नहीं था! उसने बागान की ओर नज़र डाली!

"मदद करो!" वह चीखा। कंकडों की खटर-पटर, लालटेन की जल-बुझ, रस्सी की खींच-तान...। "फैस्टस जागो! वे मेरे कोफ्ते को रौंदे दे रही हैं।"

फैस्टस बिस्तर से उछला और लगभग उड़ता उठा और खिड़की के बाहर झाँकने लगा। "क्या बात है? क्या लोमड़ियाँ हैं? अरे नहीं! फिर से नहीं!"
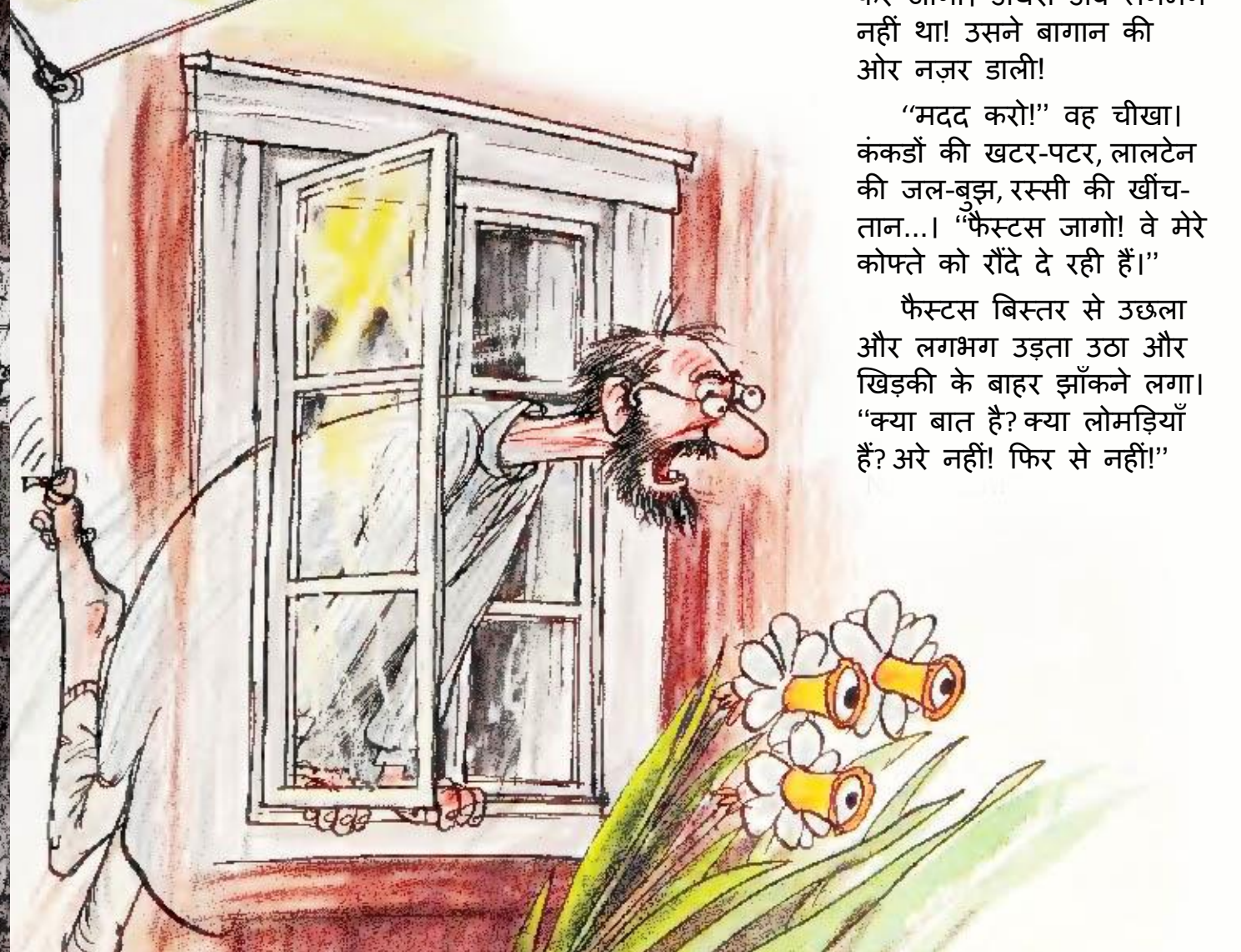
हाँ फिर से! इस बार एन्डरसन की गायों ने बागान पर धावा बोल दिया था। पल भर में फैस्टस दौड़ता हुआ बागान में आया और अपने झाड़ू से गायों को भगाने की कोशिश करने लगा। उसका सब्ज़ी बागान गायों से भरा था। कम से कम छह गायें अन्दर घुसी हुई थीं।

"हटो! भागो! तुम लोग मेरे सब्ज़ी बागान का नाश करे दे रही हो!" फैस्टस ने गरज कर कहा।

"मेरे माँस कोफ्ते से दूर हटो," मरक्युरी चीखा।

"वे हमारे कीड़ों को रौंदे दे रही हैं," मुर्गियों ने पंख फड़फड़ाते कहा।
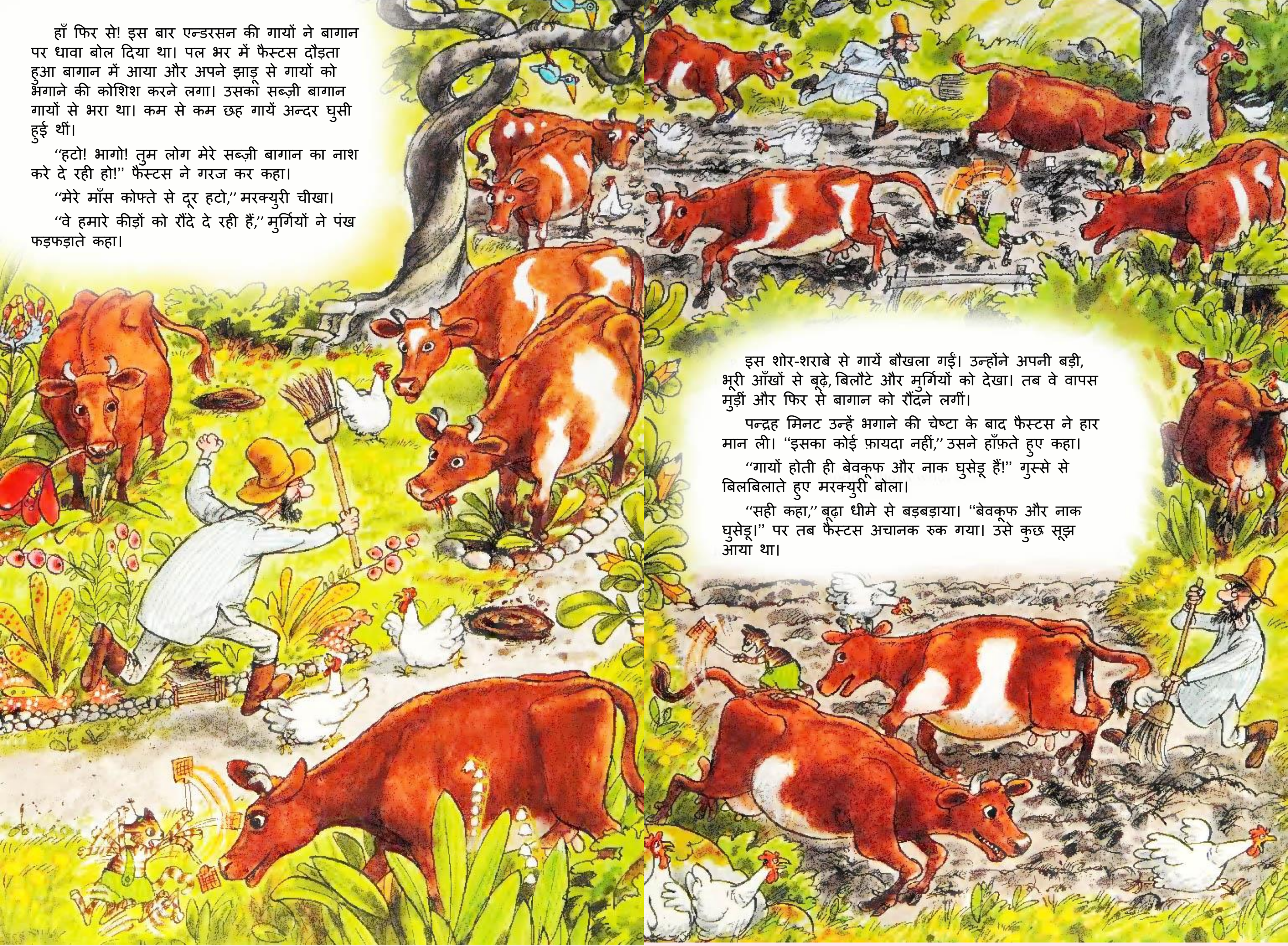
इस शोर-शराबे से गायें बौखला गईं। उन्होंने अपनी बड़ी, भूरी आँखों से बूढ़े, बिलौटे और मुर्गियों को देखा। तब वे वापस मुड़ीं और फिर से बागान को रौंदने लगीं।

पन्द्रह मिनट उन्हें भगाने की चेष्टा के बाद फैस्टस ने हार मान ली। "इसका कोई फ़ायदा नहीं," उसने हाँफ़ते हुए कहा।

"गायों होती ही बेवकूफ और नाक घुसेड़ू हैं!" गुस्से से बिलबिलाते हुए मरक्युरी बोला।

"सही कहा," बूढ़ा धीमे से बड़बड़ाया। "बेवकूफ और नाक घुसेड़ू।" पर तब फैस्टस अचानक रुक गया। उसे कुछ सूझ आया था।

गायें रुक कर देख रही थीं कि बूढ़ा, बिलौटा और मुर्गियाँ घर के अन्दर घुस गए हैं। मिनट भर बाद ही फैस्टस और मुर्गियाँ बाहर निकले, वे अब काफ़ी खुश दिख रहे थे।

''सुनो महिलाओं और गायों,'' फैस्टस ने ऐलान किया। ''मैं तुम सबका परिचय कागज़ की घुमक्कड़ थैली से करवाता हूं!''

मुर्गियों ने तालियाँ बजाईं और गायें मुँह फाड़ कर देखने लगीं। घर की सीढ़ियों पर से कागज़ की एक थैली नीचे कूदी और पलक झपकते ही बागान की ओर दौड़ पड़ी।

गायें घूर-घूर कर देखने लगीं, आख़िर उन्होंने ऐसा कुछ पहले कभी देखा जो नहीं था। थैली गलघण्टी की आवाज़ भी कर रही थी। ''बड़ा ही अजीब है,'' मुर्गियाँ उत्तेजना जताते कुड़कुड़ाईं। ''यह भला है क्या?''
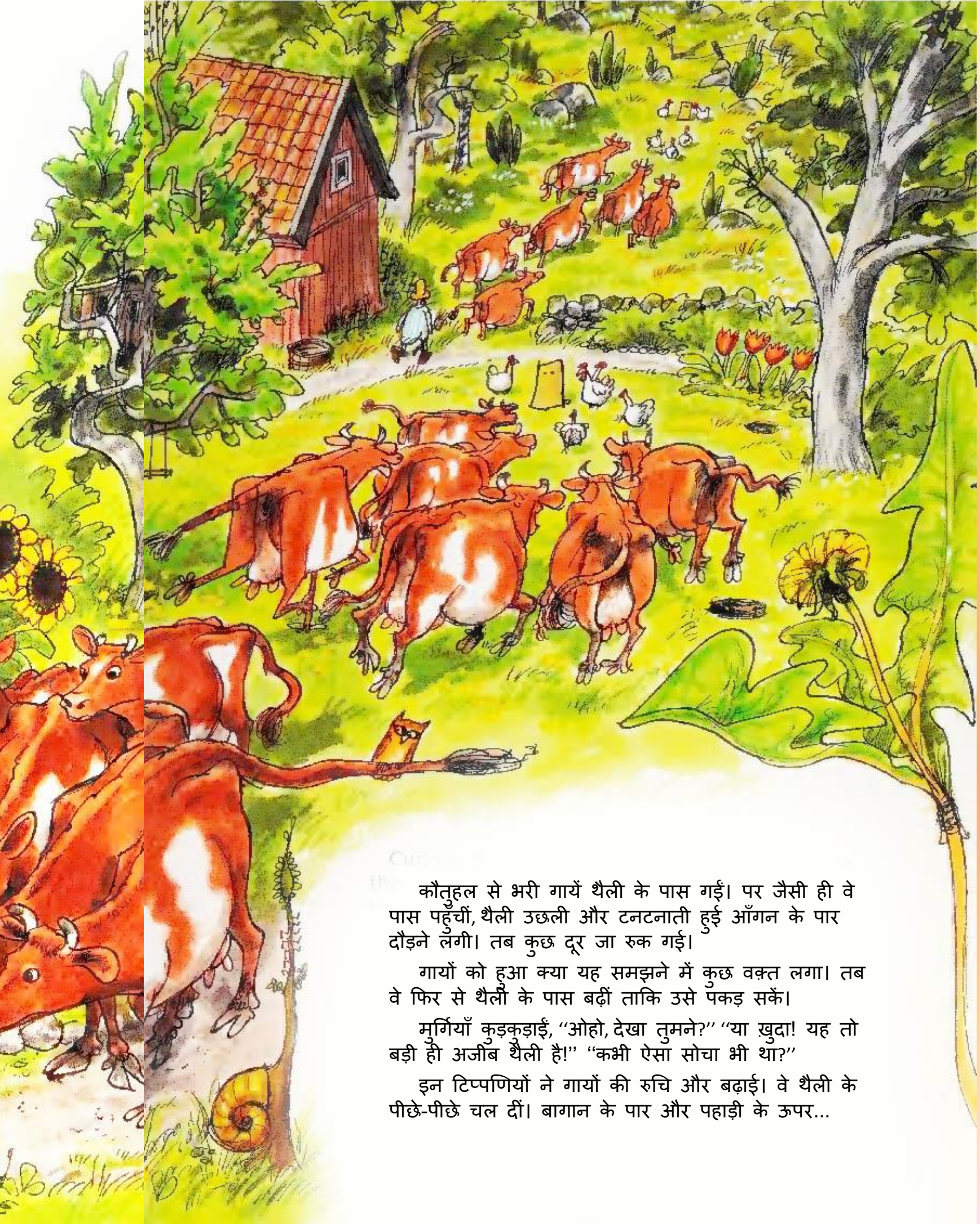
कौतूहल से भरी गायें थैली के पास गईं। पर जैसी ही वे पास पहुँचीं, थैली उछली और टनटनाती हुई आँगन के पार दौड़ने लगी। तब कुछ दूर जा रुक गई।

गायों को हुआ क्या यह समझने में कुछ वक़्त लगा। तब वे फिर से थैली के पास बढ़ीं ताकि उसे पकड़ सकें।

मुर्गियाँ कुड़कुड़ाईं, ''ओहो, देखा तुमने?'' ''या ख़ुदा! यह तो बड़ी ही अजीब थैली है!'' ''कभी ऐसा सोचा भी था?''

इन टिप्पणियों ने गायों की रुचि और बढ़ाई। वे थैली के पीछे-पीछे चल दीं। बागान के पार और पहाड़ी के ऊपर...

...ठेठ चरागाह में। जहाँ उन्हें दरअसल होना चाहिए था। फैस्टस ने उनके पीछे तेज़ी से बाड़ का फाटक बन्द कर दिया।

पर इतना भर नहीं हुआ। गायों की आँखों के ऐन सामने वह थैली अचानक एक बिलौटे में बदल गई और अपनी पूँछ लहराती बाड़ के नीचे से निकल भागी।

"अब हमारे बागान के साथ और अनहोनी नहीं हो सकती," फैस्टस ने मरक्युरी से कहा। "हम अपने सारे पड़ौसियों के पास जाएंगे और उनसे कहेंगे कि वे अपनी बाड़ों की मरम्मत करें। तब हम कल फिर एक बार बागान में बीज बोएंगे।"

"पता नहीं बूढ़े बाबा," बिलौटे ने कहा। "मुझे लगता है कि सिर्फ़ माँस का कोफ्ता बोना ही काफ़ी होगा। उसे एक भगोने में भी बो सकते हैं। पल भर सोचने के बाद मरक्युरी ने जोड़ा, "इतनी सब्ज़ियाँ किसी के लिए अच्छी नहीं हो सकतीं!"
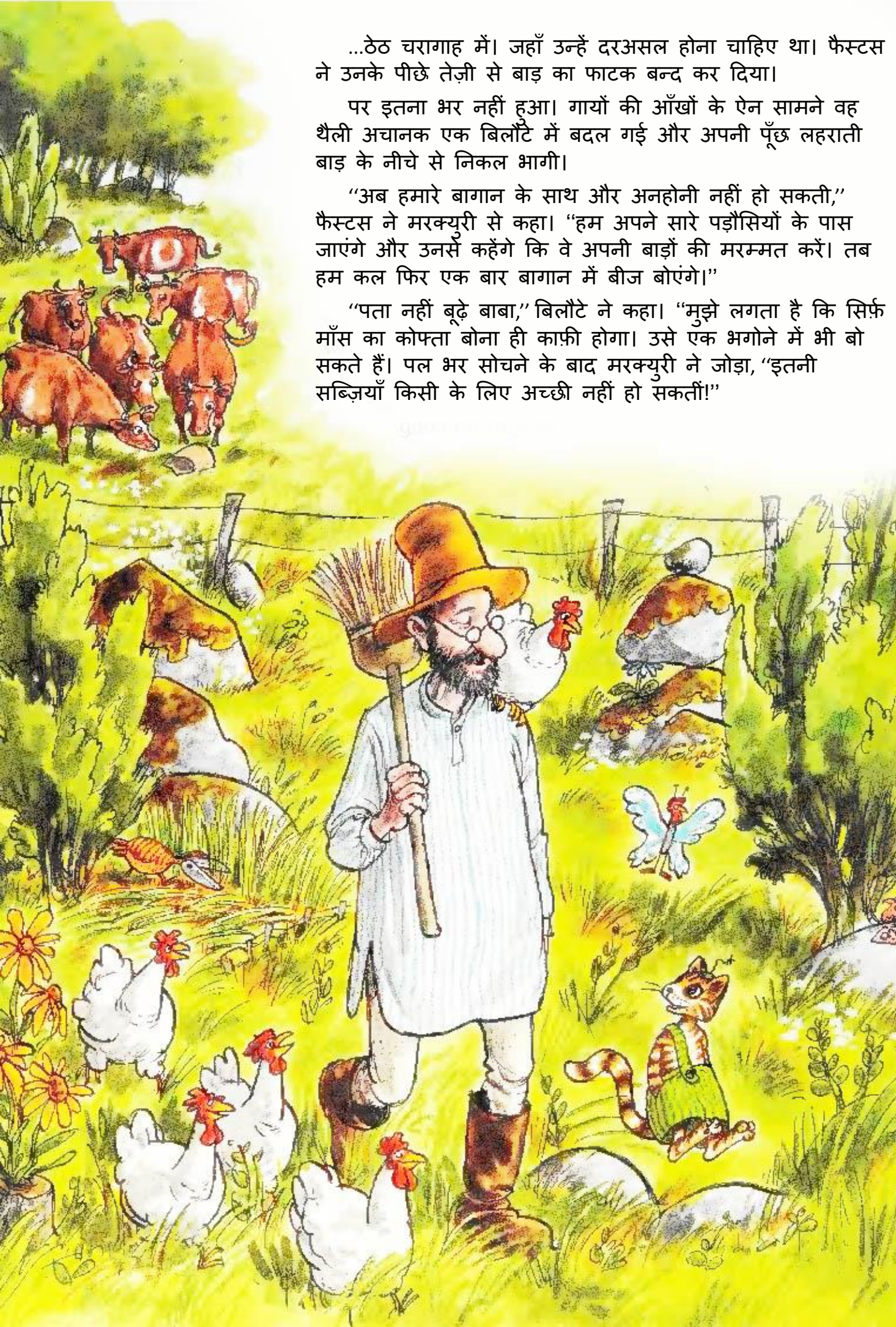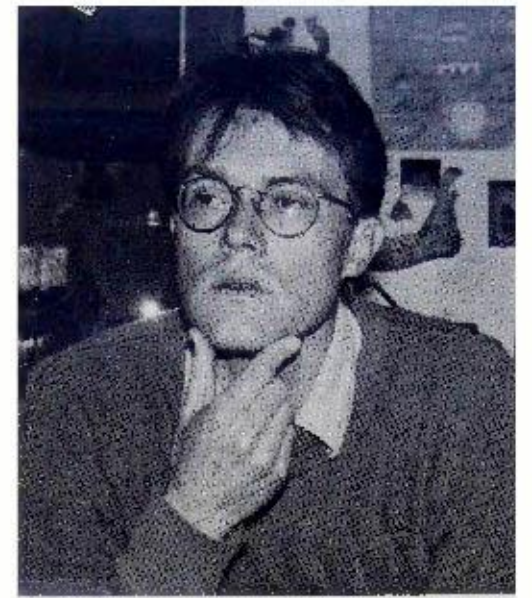
स्वैन नॉर्डक्विस्ट को छोटी-सी उम्र से ही चित्र आँकने में मज़ा आता था। पर जब उन्होंने कला शाला में प्रवेश लेने के लिए आवेदन किया, तो आवेदन नामंज़ूर कर दिया गया। सो उन्होंने स्वीडन के लुण्ड स्थित वास्तुकला कॉलेज से डिग्री ली और वास्तुकला पढ़ाते रहे।

गत सोलह वर्षों से नॉर्डक्विस्ट पुस्तकों के लिए चित्र बनाने लगे हैं। वे स्वतंत्र लेखक व चित्रकार के रूप में काम करते हैं। उनकी विशेषज्ञता बाल पुस्तकों और विज्ञापनों के क्षेत्र में है। उनके चित्र दिलखुश हैं, और उनकी शैली खिलंदड़ है। उनके रचे ख्ब्ती चरित्र, खास तौर से फैस्टस और मरक्युरी दुनिया भर के भर के चहेते बन चुके हैं।